ॐ

प्रार्थना व गायत्री

उपदेष्टा

ब्रह्मीभूत

श्री १०८ श्री स्वामी परमानन्दजी महाराज

संस्थापकः-

श्री भगद्भक्ति आश्रम रामपुरा, रेवाड़ी।

प्रकाशक व मुद्रकः-

भूमानन्द ब्रह्मचारी "भक्ति प्रेस, रेवाड़ी"।

सन् १९६५] प्रति १००० [सम्वत २०२२

मनुष्य मात्र के लिये साधारण नियम

१. मनुष्य का पहला कर्तव्य है कि सद्गुरु की शरण में जावे और उनकी कृपा सम्पादन करने के लिये शुद्ध चित्त से उनकी सेवा करे।

२. उन सद्गुरु के वचनों पर दृढ़ विश्वास रक्खे।

३. एक ही मत मार्ग का अनुसरण करे।

४. साधु सज्जन का सत्संग करे।

५. विषयों के आधीन न हो।

६. शत्रुओं को मित्र बनावे।

७. अधिक उपाधि न बढ़ावे।

८. निरन्तर सारासार का विचार करता रहे।

९. भूतमात्र पर दया रक्खे।

१०. अहर्निश परमात्मा का ध्यान करके उन पर दृढ़ आस्था रक्खे।

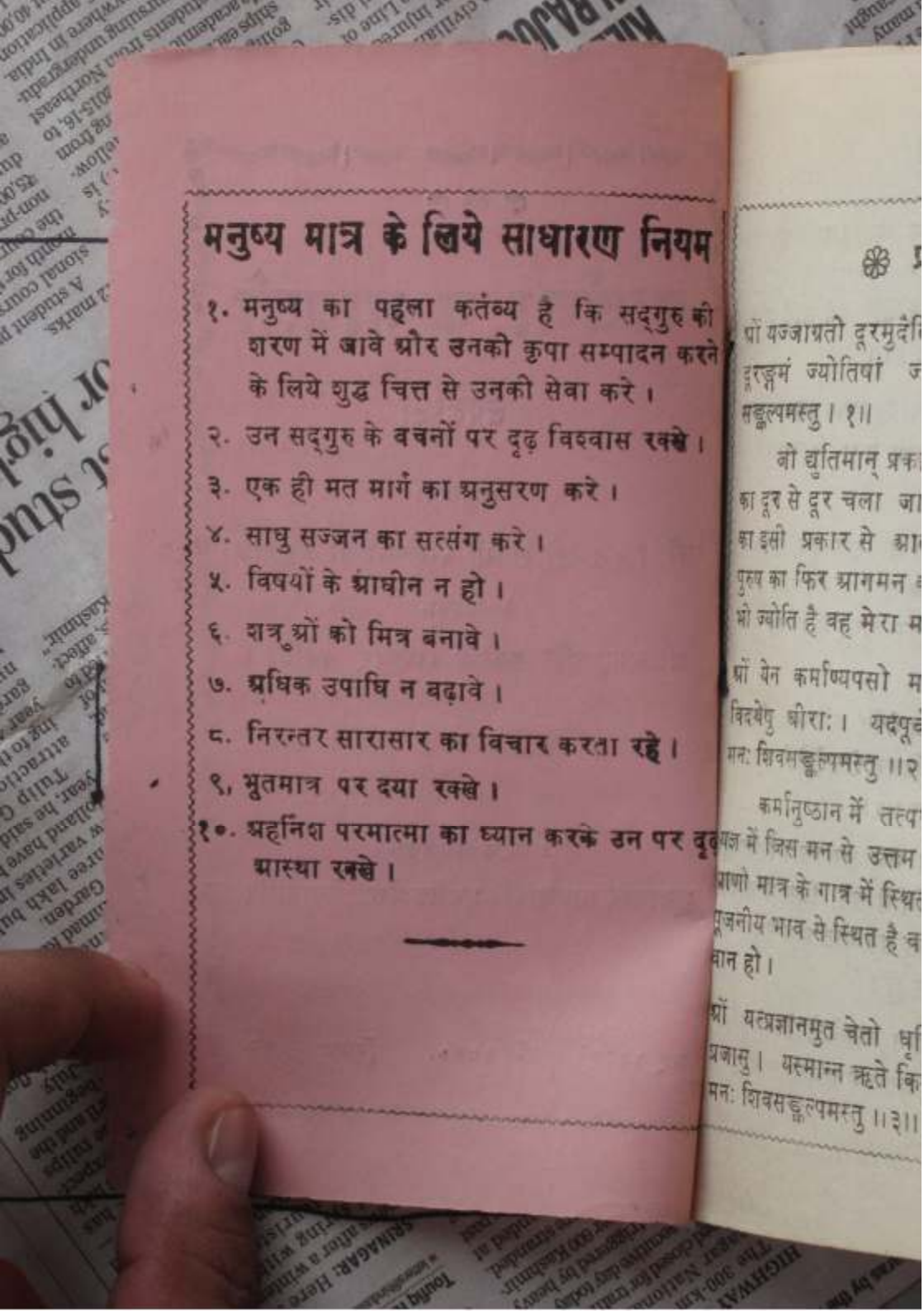

❀ प्रार्थना ❀

ओं यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति । दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिव-सङ्कल्पमस्तु । १॥

जो द्युतिमान् प्रकाश स्वरूप देव जागते पुरुष का दूर से दूर चला जाता है और सोते हुये पुरुष का इसी प्रकार से आता व जाता है, जो सुषुप्त पुरुष का फिर आगमन करता है, जो ज्योतियों का भी ज्योति है वह मेरा मन शुद्ध संकल्प वान् हो ।

ओं येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः । यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२॥

कर्मानुष्ठान में तत्पर बुद्धि सम्पन्न मेधावी यज्ञ में जिस मन से उत्तम कर्मों को करते हैं, जो प्राणो मात्र के गात्र में स्थित है, जो सब से प्रथम पूजनीय भाव से स्थित है वह मेरा मन शुद्ध संकल्प वान हो ।

ओं यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥३॥

जो प्रज्ञान, चित्त और धैर्य स्वरूप है, जो प्राणी मात्र का अन्तर आत्म स्वरूप अविनाशी ज्योति है। जिसके बिना कोई भी कर्म नहीं होता वह मेरा मन शुद्ध संकल्पवान हो।

ओं येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्परिगृहीतममृतेन् सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥४॥

जिस अविनाशी मन ने यह सब भूत, वर्तमान और भविष्यत् को ग्रहण किया है। जिस के द्वारा सात होता यज्ञ का विस्तार करते हैं। वह मेरा मन शुद्ध संकल्पवान हो।

ओं यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिंश्चित्तꣳसर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥५॥

जिस में ऋक्, साम यजु इस प्रकार स्थित हैं जिस प्रकार रथ को नाभि में अरे, जिस में प्राणी मात्र का ज्ञान, पट में तन्तु सम ओत प्रोत है। वह मेरा मन शुद्ध संकल्पवान हो।

ओं सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥६॥

जैसे अच्छा सारथी लगाम द्वारा घोड़ों को चलाता है। वैसे ही जो मनुष्यों को प्रेरणा करता है। जो कदापि जीर्ण नहीं होता और जो वेगवान पदार्थों से भी अधिक वेगवान है। वह मेरा मन शुद्ध संकल्पवान हो।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ओ३म् ॥

हे सर्वव्यापक, सत्यस्वरूप, चैतन्य और ज्ञान स्वरूप सुखस्वरूप, अनन्त अपार, सब जगत् को उत्पन्न करने वाले, उपासनीय, सब पापों को नाश करने वाले, दिव्य स्वरूप परमात्मन् हम सब आपका ध्यान करते हैं। वह परमात्मा हमारी बुद्धियों को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष में प्रेरणा करे और शुद्ध बुद्धि प्रदान करे।

यत्तेजः सवितुर्देवस्य वरेण्यं तदुपास्महे।
तत्तेजोऽस्माकं बुद्धीः श्रेयस्करेषु नियोजयेत् ॥

सब जगत को उत्पन्न करने वाले सविता देव का जो उपसनीय तेज है उस का हम भजन करते हैं। वह उपसनीय तेज हमारी बुद्धियों को धर्मार्थ काम और मोक्ष में लगावे।

—:o:—

हे तेज पुञ्ज ज्योतिःस्वरूप परमात्मन् ! ज्ञान और आनन्द के देने वाले ! विजय कराने वाले ! प्रार्थना और स्तुति करने योग्य, सबको उत्पन्न करने वाले ! सबका संहार करने वाले ! सबकी रक्षा करने वाले ! सबको प्रेरणा करने वाले ! अनन्त अपार आनन्द स्वरूप ज्ञान स्वरूप परमात्मन् हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम्हारे गुण हम में प्रकट हों और हम तुमको प्राप्त हों। जो तुम हो सो ही हम हैं और जो हम हैं सो ही तुम हो। ऐस ऐक्य भाव से हम तुम्हारा ध्यान करते हैं। तुम हमारी बुद्धियों को पवित्र और धर्मार्थ काम और मोक्ष में प्रेरणा करो। हम में तेरी सच्ची भक्ति और प्रेम प्रकट होवे, सबको हम अपना ही आत्मा समझें और हमारे शत्रु नाश को प्राप्त हों। भीतर काम क्रोध इत्यादि और बाहर हमारी उन्नति में बाधक, विघ्नकारक शत्रु सब नष्ट हों। जिस से आनन्दपूर्वक हम आपको प्राप्त हों। धन्यवादपूर्वक हमारा आपको अनन्त बार नमस्कार हो। हमारी रक्षा करो एक मात्र आप ही हमारे रक्षक हो।

ओं शम्

दोहा ओं निरंजनं दुख भजनं ररंकार ओंकार।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही अलखं सर्वाधार॥

ओ३म् निरंजन ररंकार प्रभु
सोऽहं सत्य नाम करतार।
अच्युत गुरु गोविन्द दातार
परमानन्द रूप निरधार॥१॥

एक अखण्ड ज्ञान भण्डार
तुमरी ज्योति का उजियार।
मैं मैं, मैं पन सर्वाधार
नेति नेति कर वेद उचार॥२॥

एक आत्मा अपरम्पार
शंकर ब्रह्म सर्व का सार।
ओत प्रोत सब में निरंकार
जीवन प्राण आप ओंकार॥३॥

हरि नारायण अग्नि तार
देव देव मैं करहूं पुकार।
कृष्णानन्ताऽचलहं गौड़
हूं फट अल्ला सर्व पसार॥४॥

बिनवो तुम को बारम्बार
प्रीतम प्यार करो उद्धार।
तद्वन गणपति नैनमझार
होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार॥५॥

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ।
ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् ।
योगीन्द्रसेव्यं भवरोगवैद्यं ।
श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि ॥

आनन्द स्वरूप, आनन्द के दाता, सुख स्वरूप, ज्ञान रूप, स्व स्वरूप ज्ञाता, महायोगियों के द्वारा सेव्य, संसार रोग के चिकित्सक ऐसे गुरुदेव को मैं प्रणाम करता हूं ।

परं पराणां परमं पवित्रं परेशमीशं सुरलोकनाथम् ।
सुरासुरैरर्चितपादपद्मं सनातनं लोकगुरुं नमामि ॥

परे से परे अत्यन्त पवित्र, अत्यन्त सूक्षम, सब के स्वामी, देवताओं के स्वामी, स्वर्ग लोक के स्वामी, राक्षस और देवताओं से पूजित ऐसे जिन के चरण कमल हैं उस आदि सनातन लोक गुरु को प्रणाम करता हूं ।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव ।
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव ।
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

हे प्रभो ! तू ही मेरी माता, तू ही मेरा पिता तू ही मेरा बान्धव, तू ही मेरा मित्र तू ही मेरा ज्ञान है, तू ही मेरा धन है । हे देवों के देव ! तू ही मेरा सब कुछ है ।

स्वराज्यसाम्राज्यविभूतिरेषा
भवत्कृपा श्रीमहिम प्रसादात्।
प्राप्ता मया श्रीगुरुवेमहात्मने
नमो नमस्तेऽस्तु पुननंमोऽस्तु।

लोक और परलोक की विभूतियां और सम्पूर्ण सम्पदायें आप की कृपा और महिमा से हे गुरुदेव ! मैंने प्राप्त करली हैं। इन विभूतियों के दाता गुरुदेव को मैं पुनः अनन्तवार नमस्कार करता हूं।

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षीभूतम्
भावातीत त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि॥

ब्रह्म के आनन्द को अनुभव करानेवाले, परम सुख के देने वाले, केवल ज्ञान स्वरूप, सुख दुःख मानापमान आदि द्वन्द्वों से रहित, आकाश सदृश निर्मल और व्याप्त, 'तत्वमसि' वह तू है आदि वाक्यों के द्वारा जानने योग्य गुरुदेव ! तू एक है, नित्य है, निर्मल है, अचल, है, सब के हृदय में बुद्धि रूप से साक्षी रूप व्याप्त है, भावों से दूर सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण तीनों गुणों से रहित है। ऐसे श्री गुरु को प्रणाम करता हूं।

ममात्मा परमात्मा विश्वात्मा विश्वस्वरूप
ब्रह्मात्मा सर्वात्मा सूर्यात्मा ज्योति स्वरूप ॥
अखण्डात्मा पूर्णात्मा ज्ञानात्मा ज्ञानस्वरूप
सुखात्मा विद्वात्मा सदात्मा सत्यस्वरूप ॥
भावात्मा भवात्मा शून्यात्मा शून्यस्वरूप
ज्ञातात्मा ज्ञेयात्मा ध्येयात्मा ध्यानस्वरूप ।

ओं नमः शम्भवाय च मयोभवाय च ।
नमः शंकराय च मयस्कराय च ।
नमः शिवाय च शिवतराय च ।

कल्याण करने वाले, कल्याण स्वरूप, मंगल के देने वाले, मंगल स्वरूप शान्ति देने वाले, शान्ति स्वरूप, ऐसे शिव को तथा शिव से इतर सब देवों को अनन्तवार नमस्कार है ।

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥

ओं शान्तिः ! शान्तिः ! शान्तिः !

हे भगवन् ! सूर्यादिलोक हम सब को सुखदायक हों । आकाश, पृथिवी, जल, ओषधि, वनस्पति व संसार के सब विद्वान्, ब्रह्म, वेद, यह सब हम को सब काल में सुखदायक हों ।

श्रीगुरुं परमानन्दं वन्दे स्वानन्द विग्रहम् ।
यस्य सान्निध्यमात्रेण चिदानन्दायते तनुः ॥१॥

उन आनन्द स्वरूप श्री परमानन्द को जिस की समीपता को प्राप्त करके यह जीवात्मा चैतन्य स्वरूप को प्राप्त करता है मैं नमस्कार करता हूं।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥२॥

गुरु ही ब्रह्मा गुरु ही विष्णु, गुरु ही सब से बड़ा महादेव स्वरूप है, गुरु ही साक्षात परब्रह्म है। ऐसे गुरु को मैं नमस्कार करता हूं।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥३॥

गुरु अज्ञान रूपी अन्धेरे को ज्ञान रूपी सलाई स नेत्रों के अन्दर ज्ञानको ज्योति जगाता है और ज्ञान के चक्षु खोलता है ऐसे गुरु को प्रणाम करता हूं।

यत्सत्येन जगत्सत्यं यत्प्रकाशेन भाति यत् ।
यदानन्देन नन्दन्ति तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥४॥

जिसकी सत्यता से संसार सच्चा मालूम होता है, जिसके प्रकाश से सारा संसार प्रकाशित और दीप्त है, जिस के आनन्द से सारे प्राणी

आनन्दित होते हैं उन गुरुदेव को नमस्कार करता हूं।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥५॥

जिनका ज्योतिर्मय आकार कभी खण्डित नहीं होने वाला है, जो सारे चराचर में व्याप्त है, जिसने भगवान का परमपद दिखाया है उन गुरु देव को मैं नमस्कार करता हूं।

को नमस्कार करता

येन चराचरम् ।
ीगुरवे नमः ॥५॥

र कभी खण्डित नहीं
राचर में व्याप्त है,
दिखाया है उन गुरु

ॐ भूर्भुवः स्वः ओं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ ॥

ओं:—सर्वव्यापक, सबकी रक्षा करने वाले,

भूः—सत्तास्फूर्ति देने वाले, सत्य स्वरूप परमात्मा,

भुवः—सर्व दुखों के नाशक, चैतन्य स्वरूप और ज्ञान स्वरूप,

स्वः—सुख स्वरूप, सब को सुख देने वाले,

तत्:—अनन्त अपार पर ब्रह्म,

सवितुः—सब जगत् के उत्पन्न करने वाले, प्रेरणा करने वाले, पवित्र करने वाले सविता देव,

वरेण्यम्:—भजनीय, उपासनीय वर्णन करने योग्य, तारीफ के लायक,

भर्गो.—सब पापों के भर्जन नाश करने वाले शुद्ध तेज स्वरूप ज्योति स्वरूप परब्रह्म परमात्मा,

देवस्यः—ज्ञान, आनन्द और प्रकाश के देने वाले, विजय कराने वाले, दिव्य स्वरूप, पूर्वोक्त गुण युक्त ऐसे आप परमात्मा का,

धीमहिः—हम ध्यान करते हैं हम तुम्हारो शरण होते हैं हम में हम पना आप हो हैं।

यः—वह परमात्मा

नः—हमारी

धियः—बुद्धियों को

प्रचोदयात्:—धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में प्रेरणा करे। संसार से हटा कर अपने स्वरूप में लगावे और शुद्ध बुद्धि और प्रेम रूप भक्ति प्रदान करे।

गायत्री मन्त्र सब मन्त्रों में बड़ा है। इस मन्त्र का स्वयं परमात्मा ने ब्रह्मादि ऋषि मुनियों को उपदेश किया है। मनुष्य ऐसा कल्याणकारी मन्त्र अब तक नहीं बना सका है। इस मन्त्र में भगवान् के ओं, भूः, भुवः स्वः तत्, सवितुः. वरेण्यम्:, भर्गः, और देवस्य यह नौ नाम हैं। इन नौ नामों पर नौ श्लोक भी हैं। नौका में बैठकर जैसे नदी से पार होते है वैसे ही नौ नामों के जपने से संसार सागर को पार कर मुक्ति को प्राप्त होते हैं। नौ नामों में ही भगवान् की स्तुति इसलिये की गई है कि इन नौ नामों में भगवान् के अनन्त नाम आ जाते हैं क्योंकि गिनती नौ तक ही है। आगे तो एक पर ही शून्य

रख दिया जाता है। चारों वेदों में यह मन्त्र समान रूप से आया है। इस मन्त्र से प्रातः काल मध्याह्न काल, सायंकाल और अर्द्ध रात्रि के समय इस प्रकार चार बार सन्ध्या करनी चाहिये, अर्द्ध रात्रि के समय सन्ध्या करने के लिये जब मनुष्य उठेंगे तो उन के घरों में चोरी आदि कोई बुरे काम न होंगे क्योंकि यह कर्म आधी रात के लगभग ही होते हैं। उस समय सन्ध्या निमित्त जाग हो जायेगा। रात्रि को भजन करके जब सोयेंगे तब बहुत अच्छे स्वप्न आवेंगे और बहुत लाभ होगा। उपनिषद् में कहा है:—सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति ॥

प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति ॥

सायंप्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति ॥

निशीथ तुरीय सन्ध्यायां जप्त्वा वाक् सिद्धिभवति ॥

गायत्री का सायंकाल में जप करने वाला दिनमें किये पापों का नाश करता है। प्रातः काल में जप करने वाला रात्रि में किये हुवे पापों का नाश करता है। दोनों समय जप करने वाला निष्पाप होता है। मध्य रात्रि में जप करने से वाक् सिद्धि प्राप्त होती है।

गायत्री मन्त्र का सविता देवता है। अग्नि मुख है, विश्वामित्र ऋषि है, गायत्री छन्द है और उपनयन, प्राणायाम और जप में विनियोग (इस्ते-

माल) है। यह मन्त्र आदि मन्त्र है। भगवान् के भजन में स्तुति, प्रार्थना और उपासना यह तीन बात होनी चाहियें। यह ऐसा मन्त्र है कि इस एक ही मन्त्र में स्तुति, प्रार्थना और उपासना यह तीनों बातें हैं। ओं भूर्भुवः स्व. आदि नौ नामों में भगवान् की स्तुति की गई है 'धीमहि' में उपासना (ध्यान) है। 'धीमहि' से भगवान् का ध्यान इस प्रकार करे:-"योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहमस्मि ओं ख ब्रह्म" कि जो सूर्य में स्वर्ण जैसे रंग का प्रकाश स्वरूप पुरुष है वह मैं हूं। 'धियो यो नः प्रचोदयात्' यह प्रार्थना है। इस से भगवान् से शुद्ध बुद्धि और परा भक्ति की प्रार्थना करे। इस मन्त्र में पांच अवसान हैं। 'ओ३म्' यहां पर प्रथम अवसान है 'भूर्भुवः स्वः' पर दूसरा, 'तत्सवितुर्वरेण्यम्' पर तासरा, 'भर्गो देवस्य धामहि' पर चौथा और 'धियो यो नः प्रचोदयात्' यहां पर पांचवां अवसान है। प्रत्येक अवसान पर मन्त्र जपते समय कुछ ठहर कर अर्थ का चिन्तन करता हुवा मन्त्र जपे

समस्त मुसलमानों का एक मन्त्र (कलमा) है। जिस जाति का एक मन्त्र नहीं है उसका संगठन नहीं हो सकता। भगवान् वेद में आज्ञा करते हैं कि 'समानो मन्त्रः' तुम्हारा मन्त्र समान अर्थात् एक हो। अतः सबका एक मन्त्र होना चाहिये।

सारभूतास्तु वेदानां गृह्योपनिषदो मताः ।
ताभ्यः सारस्तु गायत्री तिस्रो व्याहृतयस्तया ॥

चारों वेदों का सार उपनिषद् हैं और उपनिषदों का सार गायत्री है। इसलिये गायत्री ही एक ऐसा मन्त्र है जो सबका एक मन्त्र हो सकता है। जो गायत्री को नहीं जानता वह चारों वेदों का पारगामी भी क्यों नहीं हो शूद्र के समान है।

'या सन्ध्या सैव गायत्री'।
शास्त्रों में गायत्री को ही सन्ध्या कहा है।
'गायत्री प्रोच्यते तस्मात् गायन्तं त्रायते यतः।

इसका नाम गायत्री इसलिये है कि यह गाने वाले को संसार सागर से पार कर देती है।

गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी।
गायत्र्यास्तु परं नास्ति दिवि चेह च पावनम् ॥

यह मन्त्र वेद की माता है, पाप नष्ट करने वाला है। इस मन्त्र के अतिरिक्त भूलोक तथा स्वर्ग लोक में पवित्र करने वाला और मन्त्र नहीं है।

मनु भगवान् ने कहा है कि विधि यज्ञ से जप यज्ञ दश गुणा फलदायक है, इस में भी जिस में होट ही हिलें शतगुणा और मानसिक सहस्र गुणा फल देता है। लेटा लेटा, बैठा बैठा, डोलता फिरता जिस भी अवस्था में हो मनुष्य गायत्री का

मानसिक जप कर सकता है। इसके जपने में किसी प्रकार का भी दोष नहीं है। पुण्य ही पुण्य है। इस के जपने से सब कामना पूरी होती हैं और अन्त में स्वर्गधाम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। अर्थ सहित चाहे एक भी मन्त्र दिन में चार वार जपो वह भी कल्याण का देने वाला है। वेद का मन्त्र है, भगवान् की आज्ञा है, इससे पाप नष्ट होते हैं और ज्ञानका प्रकाश होता है।

गायत्री का माहात्म्य

इस मन्त्र को जो श्रद्धा भक्ति पूर्वक जपेगा उसे अवश्यमेव भगवान के दर्शन होंगे. मोक्ष मिलेगी, कल्याण होगा, सब पापों का नाश होगा. मनोकामना पूरी होगी। पुत्र के इच्छुक को पुत्र, धन चाहने वाले को धन, रोगी को निरोगता, विजय चाहने वाले को विजय प्राप्त होगी, सिद्धि चाहने वाले को सिद्धि, ऋद्धि चाहने वाले को ऋद्धि, विद्या चाहने वाले को विद्या, भक्ति चाहने वाले को भक्ति प्रेम चाहने वाले को प्रेम, और प्रेम का आश्रय परमात्मा प्राप्त हो जायेगा इस में सन्देह नहीं।

कीर्तन ध्वनि

गणपति दुर्गा रवि विष्णु शिव ॥

अल्ला अक्का अम्बा देवी।
परमानन्द लहैं तेरे सेवी ॥

वाहि गुरुजी वाही गुरुजी,
बे अन्त बे परवाह गुरुजी।
दीन दयाल कृपाल गुरुजी,
भगतन के रछपाल गुरुजी ॥

बं बं बं महादेव सदाशिव।
हर हर हर महादेव सदाशिव ॥

गौरी शंकर जयशिव जयशिव।
जयशिव जयशिव जयशिव जयशिव।

अलख अपार अनाम अगोचर।
ज्योति स्वरूप अकाल पुरुष हर ॥

सत्यनाम सोऽहं दुःख भञ्जन।
ररंकार ओंकार निरञ्जन ॥

नारायण चरणी नमो नमो नित।

राधा रमण हरिगोविन्द जय जय।
गोविन्द जय जय गोपाल जय जय॥

राधाकृष्ण भज कुञ्ज विहारी।
मुरलीधर गोवर्धनधारी॥
शंख चक्र पीताम्बर धारी।
करुणा सागर कृष्ण मुरारी॥

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

गौरी शंकर सीताराम।
राधे श्याम श्यामा श्यामा॥

बोल हरि बोल हरि हरि बोल।
गोविन्द माधव मुकुन्द बोल॥

राधे राधे गोविन्द बोलोरे॥

गोपी प्रिय गोपीनाथ।
गोपी जन वल्लभ॥

जय नारायण जय गोविन्द हरे।

जय राधे जय राध जय राधे॥

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द।
हरे कृष्ण हरे राम राधे गोविन्द॥
नारायण हरि ओं ओं।
ओं ओं ओं ओं ओं ओं॥

नित्यहि बोलो राधे श्याम।
हरे कृष्णा हरे राम॥

रघुपति राघव राजा राम।
पतित पावन सीताराम॥
जय रघुनन्दन जय सिया राम।
जानकी वल्लभ सीता राम॥

अच्युतं केशवं राम नारायणम्।
कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिम्॥
श्रीधर माधव गोपिका वल्लभम्।
जानकी नायकं रामचन्द्रं भजे।

केशव कृष्ण गोविन्द मुकुन्द।
घट घट व्यापक आनन्द कन्द॥

गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे।
हर शिव शंकर भव त्रिपुरारे॥

सहगान

परम पिता पूरण प्रभु, परमानन्द अपार।
प्रेम स्वरूप पावन परम, ईश्वर सर्वाधार ॥

दीन दयालु दयानिधे, दाता परम उदार।
सब देवन के देव हे, दुख दोषन से पार।

शक्ति ज्ञान आनन्द के, हे पूर्ण भण्डार।
सब से सुन्दर हे हरे, सब सारों के सार॥

तेरी ऐसी हो दया हम में बढ़े मिलाप।
संघ शक्ति का मान हो मिटे फूट का पाप॥

मीठी माला मेल की, फेरें हम दिन रात।
जो जीवन से एक हों, तजे कलह की बात॥

हम में आवे एकता, भ्रातृपन का भाव।
दिन दिन बल शक्ति बढ़े, धरम करम में चाव॥

हाथ जोड़ हो वन्दना, तुम को बारम्बार।
भक्ति भाव से नम्र हों, मन में श्रद्धाधार॥

ान

परमानन्द अपार।
ा, ईश्वर सर्वाधार॥
दाता परम उदार।
दुख दोषन से पार।
हे पूर्ण भण्डार।
सब सारों के सार॥
म में बढ़े मिलाप।
मिटे फूट का पाप॥
िर हम दिन रात।
जे कलह की बात॥
ातृपन का भाव।
रम करम में चाव॥
को बारम्बार।
न में श्रद्धाधार॥

आरती

(श्री महाराज जी की अन्तिम वाणी)

हरा रही है ज्योति चिदानन्द को।
चिदानन्द की परमानन्द की॥
कल ब्रह्माण्डों के पृष्ठ भाग पर।
त्ता स्फूर्ति सब को दे रही है निजानन्द को ॥१॥
ब ब्रह्माण्डों के बाहर भीतर।
हृदय कमल में सूर्य मण्डल में॥
जगमगा रही है ज्योति महानन्द को ॥२॥
यह ससार असार है अन्तिम।
एक ही ज्योति है अखण्डानन्द की ॥३॥
सूर्य चन्द्र विद्युत और तारे।
अग्नि ज्योति है भवानन्द की ॥४॥
ज्योति बिना कुछ और नहीं है।
अहं ज्योति है ज्ञान यही है॥
अहं ब्रह्मास्मि ज्ञान की ज्योति।
जग रही है घट घट परमानन्द की ॥५॥

आश्रम के उद्देश्य

१—श्री भगवान की भक्ति का प्रचार करना.

२—गोरक्षा और उसके लिए गोचर भूमि छुड़वाना।

३—जंगलों में वृक्ष लगवाना और उसके बीच में जलाशय बनवाना।

४—शिक्षा का प्रचार करना जिस में मनुष्य मात्र विद्या लाभ कर सकें और प्राचीन प्रथा को फिर प्रचलित करना।

५—बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना।

६—आस पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा शान्ति और प्रेम बढ़ाना।

७—सब संस्थाओं में भगवद्भक्ति और धर्म का भाव जागृत करना।

८—राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन। करना।